10 / 01/ 79 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनूभूति

वेस्ट और वेट से मुक्त संपूर्ण हल्के पन का अनुभव

➢➢ आतम विश्लेषण

➳ _ ➳ मैं मास्टर नॉलेज फुल आत्मा अपने स्वराज्य के सिंहासन पर बैठी हूं

→ स्वयं के मन बुद्धि की चेकिंग करती हूं

→ मैं आत्मा अपने मन रूपी पर्दे पर चल रही संकल्पों की फिल्म को देख रही हूं

→ कौन से संकल्प है जो मुझ आत्मा के मन में बार-बार चलते हैं

→ हर एक संकल्प की क्वालिटी चेक कर व्यर्थ संकल्पों को समर्थ संकल्पों में परिवर्तन करती जाती हूं

- एक एक संकल्प का बारीकी से विश्लेषण करती जाती हूं
- मास्टर त्रिकालदर्शी की सीट पर सेट हो हर संकल्प को ज्ञान के आधार से वेरीफाई करती जा रही हूं
- सभी भारी करने वाले संकल्पों की लिस्ट निकाल उन्हें परिवर्तन की प्रक्रिया आरंभ करती हूं

➳ _ ➳ मैं आत्मा बापदादा का इस साकारी सृष्टि पर आवाहन करती हूं

→ मेरे रूहानी सर्जन आ जाओ

→ बापदादा को अपने सम्मुख देखती मैं आत्मा बाबा से रूहानी दृष्टि ले रही हूं

→ स्व स्थिति के श्रेष्ठ आसन पर बैठ परिवर्तन शक्ति जो मुझ आत्मा को बाबा से गिफ्ट मिली है उसे कार्य में लगाती हूं

- जैसे अग्नि में डालने से सब व्यर्थ समाप्त हो समर्थ बचता है
- वैसे ही इस ईश्वरीय ज्ञान की भट्टी में हर संकल्प को डाल संपूर्ण समर्थ में परिवर्तन करती हूं
- जीवन की इस यात्रा में मन बुद्धि द्वारा पकड़ी बीती बातों को फुल स्टॉप करती जा रही हूं

→ अपने इस ब्राह्मण जीवन के उज्जवल वर्तमान को देखती हूं

→ उन सब बीती बातें परिस्थितियों का धन्यवाद जो आज मेरा वर्तमान उज्जवल हो गया

- स्वयं को संपूर्ण सकारात्मक संकल्पों से भरपूर अनुभव कर रही हूं

■ मेरा मन मेरा परम मित्र हो गया है और बुद्धि सोने का बर्तन बन गई है

➳ _ ➳ आत्मिक एक्सरसाइज द्वारा हल्के पन का अनुभव

→ मैं आत्मा उच्च ब्राह्मण कुल का श्रृंगार हूं

→ मैं ब्राह्मण आत्मा आदि मध्य अंत को जानने वाली मास्टर जानीजाननहार हूं

→ हर राज को जानने वाली राज युक्त योग युक्त आत्मा हूं

→ मैं ब्राह्मण सो फरिश्ता हूं

→ मैं फरिश्ता अव्यक्त वतन वासी हूं

→ बापदादा के संग अव्यक्त वतन में बैठ इस सृष्टि पर चल रहे ड्रामा को देखती हूं

■ इस सृष्टि पर भिन्न-भिन्न आत्माएं अपना पाट बजा रही हैं जिन्हें मैं आत्मा फरिश्ता बन देखती हूं और मनोरंजन अनुभव कर रही हूं

■ मैं फरिश्ता इस चमकीली ड्रेस को इसी वतन में छोड़ उड़ चली परमधाम की और

■ मैं बिंदी परमधाम में हूं

■ चारों और शांति के शक्तिशाली प्रकंपन अनुभव कर रही हूं

■ मैं आत्मा संपूर्ण पवित्र संपूर्ण शांत हूं

■ निराकार सर्वशक्तिमान बाप के साथ मैं आत्मा सर्व बोझ से मुक्त अपने सत्य स्वरूप का अनुभव कर रही हैं

■ मास्टर शांति का सागर मै संपूर्ण पावन आत्मा हूं

→ इस संपूर्ण पवित्र स्थिति में मैं आत्मा परमधाम से नीचे वैकुंठ धाम में सतयुग में अवतरित होती हूं

→ संपूर्ण सतो प्रधान मैं आत्मा इस सतोप्रधान सृष्टि पर हूं

→ जहां प्रकृति अपने पावन रूप में हम देव आत्माओं को सर्व सुख प्रदान करा रहे हैं

→ सुख शांति पवित्रता से भरपूर यह श्रेष्ठ जन्म है

■ हर आत्मा 16 कला संपूर्ण हैं

■ संपूर्ण सुख ही सुख है

■ हर दिन उत्सव है हर पल खुशी के नगाड़े बजते हैं हर आत्मा सुख संपन्न है